— द्वितीय अध्याय —

"राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु"

"राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु

कथावस्तु के तत्व :-

कथावस्तु उपन्यास का मूल तत्व है। यद्यपि आधुनिक काल में कथानक का महत्व कम समझा जाता है पर यह उपन्यास का मूल है। उपन्यास में व्याप्त कुतूहल का तत्व कथानक के सहारे ही विकास पाता है। उपन्यास का समग्र रूप कथानक के ढाँचे पर विकसित होता है। कथानक का चुनाव और निर्माण उपन्यास की प्रमुख विशेषता है। लेखक के कौशल का भी संकेत इसमें मिल जाता है। कथानक के समस्त अंगो का सुन्दर संगठन, घटनाओंका समुचित विन्यास उपन्यास को सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक होता है। कथानक के समुचित विकास के लिए उसे घटनाओं के पूर्वापार सम्बन्ध, कुतूहल और औचित्य को ध्यान में रखकर स्थिर करना चाहिए। अतः व्यर्थ के विवरण को हटाकर रमणीय वर्णन, चरित - उद्घाटन एवं मनोविश्लेषण करनेवाले वार्तालाप के द्वारा कथानक का विकास होना चाहिए।

उपन्यास के कथानक को तीन प्रधान भागों में बाँटा जा सकता है — १) प्रारंभ या प्रस्तावना भाग, २) मध्य या विकास, ३) परिणाम या समाप्ति। उपन्यास का विकास इसी क्रम से होना चाहिए।

अतः उत्कृष्ट कथानक को निम्नलिखित तत्वों या गुणों में विभाजित किया जाता है।

१) मौलिकता :-

कथानक की मौलिकता विषय की नवीनता, नवीन घटनाओं की कल्पना और उनके संयोजक के ढंग, वर्णन और विन्यास की विशेषताओं में देखी जा सकती हैं। जैसे कि, कहा गया है, जिसमें पाठक का परिणाम तथा आगामी घटना का आभास न पा सके, उस कथानक को मौलिक कहना चाहिए।

२) <u>प्रबन्ध कौशल</u> :-

कथानक की मुख्य और गौण कथाओं को औचित्य और प्रभाव के साथ संगठित करने की चतुराई प्रबन्ध कौशल है। इसकी तो सफल उपन्यासो में अनिवार्य आवश्यकता है। अन्यथा कथानक सुसंगठित नहीं लगेगा।

३) <u>संभवता</u> :-

उपन्यास में जो कुछ भी वर्णन है, वह संभव लगे, असम्भव नहीं। यदि किसी ऐसी घटना का या दृश्य का समावेश है जिसकी सत्यता की संभावना पर पाठक का विश्वास नहीं जमता, तो वह सारे उपन्यास को प्रभाव-हीन बना देती है। संभवता और औचित्य का स्थान हमें घटनाओं में नहीं, वार्तालाप, वेशभूषा, वर्णन सभी में रखना पड़ता है।

४) <u>सुगठन</u> :-

प्रबन्ध-कौशल के साथ-साथ समस्त उपन्यास एक सुगठित रचना होनी चाहिए। इस बल का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें अनावश्यक का त्याग और आवश्यक का ग्रहण किया गया है।

५) <u>रोचकता</u> :-

कथानक की रोचकता प्राय: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखने से ही आ जाती है, परन्तु इसके लिए उपन्यासकार आकस्मिक और अप्रत्यक्षित का सहारा लेता है। रोचकता सम्पादन के लिए पद-पद पर आकस्मिक संयोजन उचित नहीं। अप्रत्यक्षित का संयोजन, जो आकस्मिक न हो, अधिक संगत माना जाता है।

इसप्रकार एक उत्कृष्ट कथानक में उपरलिखित तत्वों का होना अनिवार्य है।

कथावस्तु के प्रकार :-

एक सफल उपन्यास की कथावस्तु को विविध प्रकारो में विभाजीत किया जाता है। उपन्यासकार किसी भी प्रकार के कथावस्तु का चुनाव कर सकता है। प्रमुख रूप से कथावस्तु को निम्न प्रकारों में विभाजित किया जाता है।

१) ऐतिहासिक उपन्यास :-

अतितकालीन इतिहास की घटनाओं, पात्रों तथा वातावरण आदि के आधारपर जो उपन्यास लिखे जाते है, उन्हें ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है।

२) सामाजिक उपन्यास :-

सामाजिक समस्याओं, प्रश्नों एवं यथार्थ का चित्रण करनेवाले उपन्यास सामाजिक कहलाते है। हिन्दी में ऐसे उपन्यास बहुत अधिक लिखे गए है। ये कृतियाँ भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का दर्पण बन चुकी है। इसप्रकार के उपन्यासों के चार उपभेद किए जाते है -- समस्याप्रधान, भावप्रधान, आदर्शवादी तथा नीतिप्रधान।

३) ग्रामीण उपन्यास :-

ग्रामीण उपन्यासों में की कथा गाँव से संबंधित होती है। इसप्रकार के उपन्यास की कथा में ग्रामीण जीवन की विविध समस्याएँ, रीति-रिवाज, परम्परा, अंधविश्वास आदि का चित्रण किया जाता है।

४) पारिवारिक उपन्यास :-

पारिवारिक उपन्यासों की कथा में परिवार विविध समस्याओं का चित्रण किया जाता है। उपन्यासकार शहरी तथा ग्रामीण परिवार की समस्याओं को उपन्यास की कथा में स्थान देते हैं।

५) <u>हास्य एवं व्यंग्य प्रधान उपन्यास</u> :-

विशुध्द हास्य एवं व्यंग्यप्रधान उपन्यासों की एक पृथकधारा है, जिसका सुत्रपात भारतेन्दुयुग से ही हुआ था। समाज की विविध परिस्थितियों को आधार बनाकर इसप्रकार के उपन्यासों में कथावस्तु का चयन किया जाता है। इसप्रकार के उपन्यास लिखनेवालों में अमृतलाल नागर, द्वारका प्रसाद, श्रीलाल शुक्ल आदि उपन्यासकार है।

इसप्रकार उपरलिखित कथावस्तु के प्रकारों का चयन उपन्यास में किया जाता हैं।

<u>शीर्षक</u> :-

उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है - शीर्षक। उपन्यास के शीर्षक पर ही उसका अस्तित्व निर्भर रहता है। शीर्षक से ही उपन्यास को सघनता और प्रसिध्दी मिलती है।

सफल उपन्यास के शीर्षको में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है।

१) <u>आकर्षक</u> --

शीर्षक का प्रथम गुण उसका आकर्षक होना है। आकर्षक शीर्षक के कारण ही पाठक उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। शीर्षक उपन्यास के कथावस्तु के अनुकुल तथा उद्देश्पूर्ण और सहयोग देनेवाला हो।

२) <u>जिज्ञासा एवं कुतुहल</u> --

उपन्यास का शीर्षक पाठक के मन में जिज्ञासा एवं कुतुहल की सृष्टि करनेवाला होना चाहिए। यदि वह पाठक के मन में जिज्ञासा एवं कौतुहल की सृष्टि न कर सका तो वह उपन्यास अनपढ़ा ही रह सकता है।

३) संक्षिप्त --

आकर्षक तथा जिज्ञासा उत्पन्न करने के साथ-साथ शीर्षक का संक्षिप्त होना अत्यावश्यक है। इसका कारण यह है कि बड़े शीर्षक के प्रति पाठक की रुचि पैदा होगी ही ऐसा निश्चित कहा नहीं जाता। संक्षिप्त शीर्षक में ही उपन्यास का मूल तत्व या उद्देश्य झलकना चाहिए। संक्षिप्त शीर्षक का संबंध कथावस्तु और चरित्र के साथ होना चाहिए।

४) केंद्रिय भावों को व्यक्त करनेवाला --

उपन्यास में शीर्षक को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उपन्यास का शीर्षक केंद्रिय भावों को व्यक्त करनेवाला होना चाहिए। शीर्षक पढ़ते ही हमें मालुम होना चाहीए कि, इस उपन्यास का केंद्रिय भाव क्या है।

इसप्रकार सफल उपन्यास के शीर्षक में उपरलिखित गुणों का होना आवश्यक हैं।

"राग-दरबारी" उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु :-

श्रीलाल शुक्ल की सम्पूर्ण रचनाओं में "राग-दरबारी" उच्च कोटी की रचना है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यवस्थाओं का ऐसा तेजाबी व व्यंग्यात्मक प्रस्तुतीकरण सर्वप्रथम हुआ है। इस कृति में लेखक ने अपने व्यापक बोध का जीवन्त प्रमाण दिया है। सर्वाधिक विशिष्टता तो यह है कि सरकार के वरिष्ठ तन्त्र से सम्बन्ध होते हुए भी "राग-दरबारी" के व्यंग्य तेवरों को लेखक द्वारा ऐसे अन्य रूप में प्रस्तुत करना, हिन्दी उपन्यासों की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। "राग-दरबारी" व्यंग्य-विधा की एक उत्कृष्ट विधायक कृति है। यह भारतीय जीवन का बृहद संग्रह है जिसमें स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण समाज की आस्थाओं, विघटनोन्मुखी जीवनादर्शों, बढ़ती हुई अनैतिक मनोवृत्ति, बदलते हुए परिप्रेक्ष्यों में उभरते खण्डित चरित्रों की समर्थ भावनाओं का प्रभावशाली चरित्रांकन हुआ है।

"राग-दरबारी" के कथानक और उसके समस्त घटनाचक्रों का केंद्र है — शिवपालगंज। शिवपालगंज "टाउनएरिया" नहीं है। सरकारी फाइलों में वह ग्रामपंचायत शिवपालगंज के नाम से उल्लेखित किया गया है। वह ऐसी स्थिति में बसा हुआ है जहाँ शहर का किनारा छोड़ते ही भारतीय देहात का महासागर शुरू हो जाता है। शहर का किनारा भी दूर नहीं है, इसलिए वहाँ की परम्पराओं, प्रवृत्तियों तथा संस्कारों की वायु की झोंके भी शिवपालगंज में आते ही रहते है।

शहर की नगरपालिका और गाँव की पंचायत को जोड़नेवाली सड़क भी इसी शिवपालगंज से गुजरती है। उसी सड़क से ट्रकों व जीपों की दौड़ चलती है और इसके साथ-साथ गाँवों में शहरी प्रवृत्तियों की द्रुत गति से घुसपैठ भी होती रहती है। गाँव विकास की इस राह से शहरों की ओर दौड़ चले जा रहे है। इसीलिए शिवपालगंज में वह सभी कुछ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में विद्यमान है, जो भारत के किसी महासागर में और देहात में हो सकता है। वहाँ तहसील और थाना पहले से ही है अब सहकारी समिती, कालेज और आधुनिक वस्तुओं की दुकान भी हैं। सिनेमा संस्कृति का प्रभाव भी खुब है। विश्व-विद्यालय का शोध-छात्र भी वहाँ उपस्थित है और इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर भारत के सभी महत्वपूर्ण अंग तथा गाँव, पुलिस, थाना, अफसर, स्कुल, विद्यार्थी, मास्टर, प्रिंसिपल, सहकारी संस्था, न्याय पंचायत, आदालती झगड़े, भ्रष्टाचार, घृणित ग्रामीण राजनीति, दादावाद, गबन, तिकड़म चुनाव की तरकीबें, नयी पीढ़ी, कुण्ठाएँ, समझौता, परस्ती, ताक पर रखी पारिवारिक मर्यादाएँ, पुँजीवादी विषमता, पहलवानी, चोरी इत्यादि सभी कुछ इस रचना में है और इसकी अभिव्यंजना का नाम "राग-दरबारी" है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के देहाती समाज के यथार्थ को उद्घाटित करने में समर्थ यह महाकाय उपन्यास स्वयं लेखक के शब्दों में इसप्रकार है — भारत के हजारों गाँवों की जिंदगी की विकृति को, वहाँ की लुजलुजी संस्कृति और लड़खड़ाती सभ्यता को लेखक ने नयी दृष्टि और प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की है। ऐसा प्रतित होता है जैसे लेखक ने शिवपालगंज के अंचल में सम्पूर्ण भारत को ग्रामीण व्यवस्था का

धूल कचरा उँडेल दिया है। सब कुछ गलत हाथों में आ गया है। गाँव, षड्यन्त्रों की राजनीति और कुचक्रों के शरण्य स्थल बन गये है। तिकड़मों का रंगमंच, लैला मजनू छाप प्रेम की लीलाभूमि, पिता-पुत्र के कलह के रणस्थल और कुछ न कर पाने की भिनभिनाहट और तटस्थ रूप से इन सबको देखते हुए और सहन करने वाली पलायनी संगीत इसी शिवपालगंज में गूँजता रहता है। आजादी के बाद बनती टूटती ग्रामीण जीवन की स्थिति चलचित्र की भाँति पाठकों के समक्ष घूम जाती है। देहाती जीवन की विकृतताओं का सिरमौर शिवपालगंज में ही राग-दरबारी का कथात्मक ताना-बाना बुन गया है। शिवपालगंज की आत्मा में शासकों की निरंकुशता व हिंसात्मक उच्छृंखलता का अट्टाहास है तो शासितों, शोषितों व पीड़ितों का करुण हाहाकार भी करुण क्रन्दन करता है। इस गाँव के कण-कण में भारत की आत्मा बसती है और वहाँ की भूमि को इस बात का गर्व है कि, —

" सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैला है। " [१]

इसप्रकार "राग-दरबारी" का दरबार इस शिवपालगंज में जुटा हुआ है। जहाँ मानवीय अच्छाइयों के अतिरिक्त सभी कुछ विद्यमान है और यही इस गाँव की विशेषता है।

× शिवपालगंज गाँव में रंगनाथ नामक एक युवक अपने मामा वैद्यजी के पास आता है। रंगनाथ एम॰ए॰ पास करके रिसर्च कर रहा है। रंगनाथ खादी धारी है कन्धे पर भूदानी झोला है। इक ड्राइवर उसे सी॰आय॰डी॰ अफसर समझकर लिफ्ट समझकर लिफ्ट देने के लिए तैयार हो जाता है।

उपन्यास के सभी घटनाचक्रों के जन्मदाता वैद्यजी एवं उनके प्रतिद्वंन्दी बाबू रामाधीन भीखमखेड़वी है। गाँव के इन दोनों नेताओं का विगत एवं वर्तमान स्वार्थलीला से परिपूर्ण है। दोनों अपने साम्राज्य को फैलाने में दत्तचित्त है। प्रजातंत्र उनके लिए सुविधाओं का उन्मुक्त द्वार है, दोनों "लूटो दे भाई" के अंदाज में अपना घर भरने में तल्लीन है। वैद्यजी को-आपरेटिव युनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और छंगामल इंटरमीडिएट कालेज के मैनेजर है। धूर्तता से वे अपने अपढ़ नौकर

सनीचर को ग्राम-सभा का प्रधान निर्वाचित करवा देते हैं। भीखमखेड़वी अपने भतीजे को पंचायत का प्रधान बनवाकर अनुदानों को हथिया लेते हैं। इन दोनों नेताओं की आपसी टकराहटों तथा इंटर कालेज की अनियमितताओं के वर्णन इस उपन्यास की कथावस्तु निर्मित हुई है।

कॉलेज के प्रिंसिपल का काम वैद्यजी के यहाँ जाकर खुशामद, चुगली और दरबारगीरी करना है। कॉलेज में योग्यता की कोई कद्र नहीं है। कॉलेज में प्रतिभावान खन्ना मास्टर भी जो वैद्यजी के आचरण और हरकतों से वाकिफ हैं। खन्ना और उसका गुट प्रिंसिपल और वैद्यजी के विरुद्ध के विरोध है, वैद्यजी का एक बेटा रुप्पन कॉलेज का विद्यार्थी होते हुए भी सर्वोच्च-सत्ता उसके हाथ में है। दूसरा बेटा बद्री पहलवान है। पुलिस वैद्यजी की सलाह से ही कदम उठाया करती है - सही हो या गलत। खन्ना मास्टर अपनी योग्यता के बल पर वाइस प्रिंसिपल बनने की ख्वाहिश रखते हैं। कॉलेज की राजनीति में उलझकर वे प्रिंसिपल के आगे हार माननी पड़ती है और कॉलेज से अपना त्यागपत्र देना पड़ता है। लंगड़ नाम का पात्र रिश्वत देने के बदले धर्म की दुहाई देते हुए अपनी मिसिल चाहता है, लेकिन सफल नहीं हो पाता। इस भ्रष्ट व्यवस्था में धर्म की बात कोई भी नहीं जानता।

डॉ॰ ज्ञानचन्द गुप्त का यह कथन सर्वथा उचित है कि, "राग-दरबारी" की कथा कोई सिलसिलेवार कथा नहीं है, लेखक ने अपनी सूक्ष्म एवं सशक्त व्यंग्य - शैली शिवपालगंज के समस्त जीवन तन्तुओं को विविध कोणों से पकड़ने का प्रयास्त किया है।" [२]

उपन्यास की सभी घटनाओं को लेखक ने हास्य एवं व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। विभिन्न प्रसंगों को पढ़ते समय अधरों पर मुस्कान खिली पड़ती है। कथानक की आदि, मध्य, चरमसीमा और अंतवाली प्रचलित पद्धति यहाँ नहीं है। घटनाएँ विभिन्न नगरों में घटीत नहीं होती, नायक-नायिका का जीवन यहाँ नहीं है। छोटे से शिवपालगंज में जो कुछ घटित होता है, रंगनाथ उसका दर्शक है। शिवपालगंज पूरे देश का मुकुर बन गया है क्यों कि ऐसे शिवपालगंज देश के कोने-कोने में हैं।

कथानक की दृष्टि से महत्वपूर्ण कुछ रोचक प्रसंग निम्नलिखित हैं —
रंगनाथ द्वारा ट्रक में सफर, थाना शिवपालगंज का चित्रण, दरोगा बख्तावर सिंह की कथा, छंगामल कालेज का इतिहास, खन्ना मास्टर एवं प्रिंसिपल के द्वंद, तमंचे के बलपर वैद्यजी का कॉलेज के मैनेजर पद पर पुनर्निर्वाचन, बद्री पहलवान की रिक्शा यात्रा, गयादिन की लड़की बेला का अंधेरे में रंगनाथ से लिपट जाना और उसके भाग जाने पर रंगनाथ का पश्चाताप, सनीचर द्वारा दुबीन सिंह के संस्मरण की कथा, कुसहर प्रसाद छोटे पहलवान प्रसंग, पंडित राधेलाल प्रसंग, कुसहर प्रसाद छोटे पहलवान के द्वंद्व में पंचायत का फैसला, गयादिन वाद की व्याख्या, बेला का फिल्मी गीतों से सजा प्रेमपत्र, कॉस को गाँठ देने के बहाने धार्मिक विश्वासों और रूढ़ियों का निरूपण जोगनाथ के मुकदमे में छोटे पहलवान की अद्भुत गवाही, विद्यालय निरीक्षक का ओजपूर्ण भाषण, खन्ना मास्टर के मामले में मजिस्ट्रेट का तर्कपूर्ण भाषण गयादीन के घर चोरी का प्रसंग, भीखमखेड़वी के यहाँ ताश का खेल और पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद की समस्या पर लेखक के विचार प्रिंसिपल और रंगनाथ की सैर दिनों-दलों द्वारा शामियाने लगाकर डिप्टी एज्युकेशन डायरेक्टर की प्रतीक्षा का प्रसंग, वैद्यजी द्वारा खन्ना और मालवीय से त्याग पत्रों की माँग, बद्री पहलवान के पक्ष में वैद्यजी का मैनेजरी छोड़ना, यह सारा नाटक देखकर शोधछात्र रंगनाथ की उदासी एवं पलायन संगीत।

कथानक में काल्पनिक, अस्वाभाविक एवं गढ़ा हुआ कुछ भी नहीं है। देश की पतनावस्था का यह यथार्थ चित्र हँसा-हँसा कर बेहाल करने के लिए नहीं है, बल्कि यह हमें विषाद से भर कर चिंतन के लिए बाध्य करता है।

डॉ॰ भगवानदास वर्मा के अनुसार —

" भारतीय संगीत की परम्परा में "दरबारी" नामक राग खास मौकों पर गाया जाता है, जब दरबार लगता था या राजा की वर्षगाँठ मनायी जाती थी तब राज्य के प्रसिध्द गायक "राग-दरबारी" अलापते थे। इस राग के माध्यम से जो "चीज" प्रस्तुत की जाती थी वह खासकर बधाई, मुबारकबादी तथा अभिनन्दन की भावनाओं को व्यक्त करती थी। दरबार के सभी लोग संगीतकार की पेश

की हुई "चीज" की दाद देकर राजा की मुबारकबादी की सामुहिक कामना करते थे। " [3]

बड़े का अनुकरण छोटा करता है और इसप्रकार अनुकरण की परंपरा देहातों तक जा पहुँचती है। सभी पर शासन करने का भूत सवार है — सेवक बनने को कोई तैयार नहीं है। ये नेता अपने क्षेत्र के सामंत होते हैं और प्रजा के कल्याण हेतु बनाई गई सभी संस्थाओं पर इनका एकाधिकार होता है। इनके कर्मचारियों को ये अपनी राजनीति का मोहरा बना लेते है। ये सामंत सदैव जी हुजूरी से घिरे रहते है। इन्हें चमचों के बीच में रहने की आदत हो जाती है। इसप्रकार नगर से लेकर छोटे गाँव तक दरबारों की एक श्रृंखला है। इस दरबारी - संस्कृति ने हमारी प्रगति को कुंठित कर भ्रष्टाचार का घिनौना परनाला तैयार किया है। जिसका जल स्वतंत्र भारत की भव्य इमारत को जर्जर कर रही है। इस दरबारी संस्कृति के दुष्परिणामें का व्यंग्यात्मक वर्णन प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश है। शुक्ल जी ने इन प्रमुख घटनाओं को लेकर कथावस्तु का सरल विकास किया हैं।

इसप्रकार समस्त घटनाचक्रो की मूल धुरी शिवपालगंज को बनाया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के देहाती समाज के यथार्थ को उद्घाटित करने में समर्थ यह महाकाय उपन्यास स्वयं लेखक के शब्दों में इसप्रकार हैं —

> ""राग-दरबारी" का सम्बन्ध एक बडे नगर से कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिन्दगी से है, जो पिछले बीस वर्षो की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थी और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यह उसी जिंदगी का दस्तावेज है। " [४]

<u>कथावस्तु के तत्वों के आधारपर "राग-दरबारी" उपन्यास का विवेचन</u> :-

१) <u>मौलिकता</u> :-

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है। यह उनका एक मौलिक उपन्यास है। "राग-दरबारी" में मौलिकता

की व्यंजना दिखाई देती है। शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु में मौलिकता को प्रथम स्थान देकर मौलिकता की सृष्टि की है। "राग-दरबारी" इस उपन्यास के कथानक में नवीनता दिखाई देती है, जिसके कारण पाठक इस उपन्यास की ओर सहज ही आकृष्ठ होता है।

"राग-दरबारी" उपन्यास समस्याप्रधान है। इस में सिर्फ शिवपालगंज की समस्याओं का ही चित्रण न करके शिवपालगंज को केंद्र मानकर भारत देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षणिक समस्याओं को प्रकट किया है। पाठक को लगने लगता है कि, यह सिर्फ शिवपालगंज की ही कहानी नहीं बल्कि संपूर्ण भारत देश की कहानी है। उपन्यासकारने घटनाओं की कल्पना विविध समस्याओं के अनुरूप ही की है। इस उपन्यास में घटनाक्रम में मौलिकता दिखाई देती है। घटनाक्रम में एकात्मता नहीं है लेकिन इसमें उपन्यासकार का कोई दोष नहीं है। क्योंकि उनका उद्देश एक ही घटना का चित्रण न कर अनेक विविध घटनाओं को लेकर, सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य कसना है।

उपन्यास को पढ़ते समय आगामी घटनाओं का आभास नहीं मिलता परंतु अपने कथानक को मौलिक बनाने के लिए उन्होंने विविध घटनाओं का संगठन सुव्यवस्थित रूप में किया है।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि, श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" इस उपन्यास की कथावस्तु में मौलिकता इस गुण को अपनाया है।

२) प्रबन्ध कौशल :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" इस उपन्यास प्रबन्ध कौशल की दृष्टि से उन्नायक कृति है। शुक्ल जी ने कथावस्तु संगठन में प्रबन्ध कौशल की ओर अधिक ध्यान दिया है। इस उपन्यास में घटनाओं में वैविध्य मिलता है लेकिन शुक्ल जी ने प्रबन्ध कौशल की ओर भी अधिक ध्यान दिया है।

"राग-दरबारी" शुक्ल जी का एक सफल समस्याप्रधान व्यंग्यात्मक उपन्यास है। इसमें मुख्य कथानक के साथ-साथ गौण कथा भी प्रकट की हैं। इसमें मुख्य कथा— रंगनाथ के शिवपालगंज आना और अपने मामा वैद्यजी के यहाँ रहकर रिसर्च करना है। परंतु रंगनाथ का शिवपालगंज में रहकर वहाँ का वातावरण, वहाँ की विविध घटनाओं को देखकर घबराने लगता है। वैद्यजी और उनका उस गाँव पर प्रभाव देखकर उसका मन ऊब जाता है। धीरे-धीरे गौण कथा प्रारंभ हो जाती है। शिवपालगंज का पुलिस थाना, ग्रामसभा, इंटरमिडिएट कॉलेज, को-आपरेटिव युनियन और इन सब पर वैद्यजी का प्रभाव आदि बातें सामने आती है।

मुख्य कथा के साथ-साथ गौण कथाएँ सामने आने लगती है। लेकिन उपन्यासकार की प्रबन्ध कौशलता के कारण मुख्य कथा के साथ-साथ गौण कथाएँ भी उसमें सम्मिलित हो जाती है और विविध घटनाएँ सामने आते हैं।

यह एक सामाजिक समस्याप्रधान उपन्यास होने के कारण मुख्य कथा के विकास के साथ-साथ शुक्ल जी ने गौण कथा को भी विकसित किया है। उपन्यासकार की प्रबन्ध कुशलता के कारण ही इस उपन्यास की कथावस्तु में एकसमता दिखाई देती है।

३) <u>संभवता</u> :-

"राग-दरबारी" उपन्यास एक दृष्टि से वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है। लेखकने इस उपन्यास में अनेक घटनाओं का चित्रण वर्णनात्मक शैली में किया है। लेकिन उसके साथ-साथ चित्रित घटनाओं में संभवता रहे इस बात की ओर भी ध्यान दिया है। कथावस्तु में चित्रित घटनाएँ संभव लगती है। शुक्ल जी ने शिवपालगंज इस गाँव को केंद्र बनाकर उसके इर्द-गिर्द घटीत होनेवाले घटनाओं का चित्रण करके वास्तविकता को ध्यान में रखा है। इस उपन्यास में सत्य या यथार्थता का सही चित्रण है। कहीं भी अविश्वास का दर्शन नहीं होता। संपूर्ण घटनाएँ विश्वानीय लगती हैं, जिसके कारण कथावस्तु में संभवता का गुण नजर आता है।

शुक्ल जी ने अनेक घटनाओं को लेकर समाज की हर स्थिति पर करारा व्यंग्य किया है जो संभव लगता है असंभव नहीं। जैसे लेखकने वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है, --

" वर्तमान शिक्षा-प्रणाली रास्ते में पड़ी कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है। " [5]

राजनैतिक विघटन स्थिति का सही चित्रण वैद्यजी के माध्यम से किया है। वैद्यजी राजनिति के सफल खिलाड़ी है। शुक्ल जी ने उनके बारे में लिखा है -

" सीधे के लिए बिल्कुल सीधे है और हरामी के लिए खानदानी हरामी। " [6]

यहाँ वैद्यजी का वर्णन घटना के अनुकूल है क्योंकि वे छंगामल इंटरमिडिएट कॉलिज के मैनेजर तथा को-आपरेटिव युनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर है। "राग-दरबारी" में इसप्रकार अनेक संभाव्य घटनाओं का वर्णन देखने को मिलता है। उपन्यास में संभाव्यता लाने के लिए उपन्यासकारने पात्रों के चरित्र-चित्रण पर ही अधिक बल दिया है। उनकी वेशभुषा, वार्तालाप आदि बातों की ओर अधिक ध्यान दिया है क्योंकि उपन्यास में संभवता प्रकट होनी चाहिए और संभवता प्रकट हुई भी है।

अत: श्रीलाल शुक्ल जी ने उपन्यास में संभाव्यता लाने के लिए पात्रों के कार्यों का तथा अनेक घटनाओं का सही चित्रण किया है। कहीं भी औचित्यपूर्णता को हीन होते नहीं दिखाया है।

४) सुगठन :-

"राग-दरबारी" एक सामाजिक समस्याओं का चित्रण करनेवाला एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास में विविध घटनाओं का चित्रण किया है। समाज की हर परिस्थितिपर व्यंग्य प्रहार किया है, लेकिन ऐसा करते समय उपन्यासकारने सुगठन तत्व की ओर भी अधिक ध्यान दिया है। कहीं भी प्रबंध कुशलता एवं सुगठन में व्यत्यय नहीं आने दिया। घटनाओं का चित्रण क्रमिक रूप से

किया है। घटनाक्रमों में विषमता दिखाई दी तो उपन्यास प्रभावहीन बन जाता है। इसीकारण शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" में सुगठन कुशलता का -हास नहीं होने दिया। उनकी कुशल प्रतिभा के कारण उपन्यास की सुगठिता में बाधा उत्पन्न नहीं हुई।

इस उपन्यास में मुख्य कथा के रूप में शिवपालगंज इस गाँव को लिया है और वैद्यजी को इस गाँव के प्रमुख मानकर अन्य अनेक गौण घटनाओं को सुगठित रूप से प्रस्तुत किया है। उपन्यास पढ़ते समय पाठक का ध्यान दूसरी ओर केंद्रित नहीं होता।

"राग-दरबारी" इस उपन्यास में शुक्ल जी ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक घटनाओं को सुसंगठित रूप से चित्रित किया है। साथ ही साथ उन्होंने अनावश्यक घटनाओं को त्यागकर आवश्यक घटनाओं को छुटने नहीं दिया है।

५) <u>रोचकता</u> :-

उपन्यास में रोचकता का गुण होना अनिवार्य है। श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित "राग-दरबारी" इस उपन्यास को पढ़ते ही रोचकता निर्माण होती है। उपन्यास के कथानक में रोचकता लाने के लिए कथावस्तु के सभी तत्वों का उपन्यासकारने सही पालन किया है। प्रबंध कौशलता, संभाव्यता, मौलिकता आदि गुणों के कारण उपन्यास में रोचकता पैदा हो गई है। पाठक को उपन्यास पढ़ते समय "आगे क्या होगा" इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट होता है इसीकारण उपन्यास में रोचकता का गुण होना अनिवार्य है। यह गुण "राग-दरबारी" इस उपन्यास में दिखाई देता है। जैसे इस उपन्यास में केवल एक ही नारी पात्र है - बेला। ज्यो प्रेमपत्र तथा फिल्मी गीतों को लिखनेवाली एक युवती के रूप में चित्रित की गई है। रंगनाथ और रुप्पन के सपनों में आती रहती है। लेकिन इसका मतलब रहस्यात्मक घटना का चित्रण करना ऐसा न होकर दिशाहिन युवकों के मानसिक दिशा का चित्रण करना है।

इस उपन्यास में रोचकता लाने के लिए शुक्ल जी ने अप्रत्याशितता का संयोजन किया है। अप्रत्याशित का संयोजन आकस्मिक न हो, इस बात की ओर भी ध्यान दिया है। "राग-दरबारी" का उद्देश विविध सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक विषमताओं पर व्यंग्य करना है। लेकिन इन विषमताओंपर व्यंग्य करते समय उपन्यासकारने रोचकता को हीन नहीं होने दिया है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास में शुक्ल जी ने कथावस्तु का संयोजन करते समय विविध घटनाओं में रोचकता निर्माण की है, जिनके कारण उपन्यास पढ़ते समय पाठक का मन मुग्ध हो जाता है।

श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" इस उपन्यास के कथावस्तु में तत्वों का पालन करते हुए कथावस्तु का संयोजन किया है। जिसके कारण "राग-दरबारी" इस उपन्यास की कथावस्तु सुसंगठीत और रोचक बन गई है। इसीकारण यह उपन्यास कथावस्तु के तत्वों के आधारपर खरा उतरता है। कहीं भी कथावस्तु के तत्वों को कमजोर होते नहीं दिखाया है। इस उपन्यास में एक ही मुख्य कथा है और प्रासंगिक और गौण कथाएँ ही अधिक है। लेकिन प्रासंगिक और गौण कथाएँ मुख्य कथा से जुड़ी होने के कारण उसमें एकरसता आयी है। इस उपन्यास की कथावस्तु का विकास विविध घटनाओं और विविध पात्रों को लेकर सही रूप में किया है। अतः कथावस्तु की तत्वों की दृष्टि से यह एक प्रभावी और सफल उपन्यास है।

६) कथावस्तु के प्रकार के आधारपर "राग-दरबारी" का विवेचन :-

"राग-दरबारी" श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित एक व्यंग्यात्मक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में शुक्ल जी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की विविध समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में लेखकने अपने व्यापक बोध को जीवन्त प्रमाण किया है। यह भारतीय जीवन का बृहद संग्रह है, जिसमें स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन की आस्थाओं, विघटनोन्मुखी जीवनादर्शी, बढ़ती हुई अनैतिक मनोवृत्ति, बदलते हुए परिप्रेक्ष्यों में सभरते खंडित

चरित्रों की समर्थ भावनाओं का प्रभावशाली परित्रांकन हुआ है। इसीकारण "राग-दरबारी" इस उपन्यास को एक ही कोटी में रखना उचित नहीं है।

"राग-दरबारी" में शिवपालगंज इस गाँव को केंद्र मानकर-शिवपालगंज के माध्यम से विविध सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक कथा पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया है। इसीकारण "राग-दरबारी" इस उपन्यास की कथावस्तु को एक ही प्रकार में विभाजित करना असंगत होगा।

ग्रामीण - सामाजिक - समस्याप्रधान - व्यंगात्मक उपन्यास :-

"राग-दरबारी" में श्रीलाल शुक्ल जी ने विविध सम-सामायिक समस्याओंपर व्यंग्य किया है। वह एक सफल सामाजिक उपन्यास है। शुक्ल जी ने सामाजिक समस्याओं को सही रूप में उजागर किया है। शिवपालगंज के नेता वैद्यजी है। वह राजनीति के खिलाडी है। वह अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष है। परम्परानुसार अपने पुत्रों को ही उन पदों पर बिठाना चाहते है। छंगामल इंटरमिडिएट कॉलेज के वह मैनेजर है। गुंडागर्दी के बलपर दुबारा वे उस पद पर बैठते है। उनके पास भ्रष्ट राजनीति है। को-आपरेटिव युनियन में गबन हो जाता है, वैद्यजी उसके लिए रामस्वरूप नामक सुपरवाइजर को दोषी ठहरौते है। अंत में अपने पुत्र बद्री पहलवान को ही को-आपरेटिव युनियन के डायरेक्टर नियुक्त करवाते है।

शिवपालगंज में गुंडागर्दी का बोलबाला अधिक है। बद्री पहलवान और उनके मित्र गुंडागर्दी करके वैद्यजी को मदत करते है। कॉलेज के अध्यापकों में भी गुटबन्दी है। अध्यापकों का दो गुट है। वैद्यजी और रामाधीन भीखमखेड़वी उन गुटों के प्रमुख है। खन्ना मास्टर और मालवीय पर हमेशा अत्याचार किया जाता है। प्रिंसिपल वैद्यजी का वफादारी है। वह गुटबन्दी को कम करने के बदले बढ़ाता रहता है। अंत में वैद्यजी द्वारा खन्ना मास्टर और मालवीय से कॉलेज से त्यागपत्र लिया जाता है।

शुक्ल जी ने सामाजिकता को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति पर भी प्रकाश डाला है। शिक्षा-प्रणाली की समस्याओं को भी प्रिंसिपल खन्ना, मास्टर, मालवीय, मोतीराम मास्टर आदि के द्वारा स्पष्ट किया है। उस कॉलेज के छात्र भी अनुशासन हीन वर्ग के प्रतिनिधी है। वें कॉलेज में पढ़ने नहीं आते, बल्कि गुंडागर्दी, गुटबन्धी तथा अध्यापकों की छेड़ छाड़ करने के हेतु आते है।

शुक्ल जी ने शिवपालगंज के पुलिस थानो का चित्रण कर पुलिस लोंगो की नपुसंक वृत्ति पर भी प्रकाश डाला है। तहसील कार्यालयों में चलनेवाली रिश्वतखोरी प्रवृत्ति पर शुक्ल जी ने प्रकाश डाला है। इस उपन्यास में लंगड एक ऐसा पात्र है जो तहसील कार्यालय से जमिन के नक्कल प्राप्त करना चाहता था। बल्कि लोगों ने उनसे रिश्वत की माँग की। लेकिन लंगड ने बिना रिश्वत दिए नक्कल को प्राप्त करना चाहा, लेकिन प्राप्त न कर सका।

रंगनाथ के माध्यम से विद्यार्थी वर्ग की विकृत मनोदशा का भी चित्रण सही रुप में हुआ है। रंगनाथ शोधार्थी छात्र है, लेकिन शोध काम को वह "घास खोदने" का काम समझता है। वह शिवपालगंजीय वातावरण में आकर निराश हो जाता है, उस वातावरण से सामना करने का सामर्थ्य उसमें नहीं है। वह विरोध भी नहीं करता, इस उपन्यास के अंत में वह हार कर पलायण करता है।

सरकारी अधिकारियों की भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति पर भी उपन्यासकारने प्रकाश डाला है। सब किसतरह वैद्यजी के चमचे बन गए है। वैद्यजी भी उन अधिकारियों की सहाय्यता से अपने काम में सफलता प्राप्त करते है। इसके साथ गाँव के ग्रामसभा का चित्रण शुक्ल जी ने प्रस्तुत किया है। वैद्यजी अपने राजनीति के बल पर ग्राम सभा प्रधान सनीचर को चुनते है, जो एक भंग घोटनेवाला नौकर था। जोगनाथ आदि पात्रों के माध्यम से युवकों की दिशाहीन तथा गुंडागर्दी प्रवृत्ति का स्पष्ट चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि, "राग-दरबारी" इस उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल जी ने कथावस्तु चुनाव में विविध सामाजिक स्थितियों को लिया है

और उन पर व्यंग्य प्रहार किया है। इस उपन्यास की मुख्य तथा गौण कथा को सामाजिक स्थितियों में विभाजित किया है।

"राग-दरबारी" का विषय सामाजिक है, लेकिन मुख्य तथा गौण कथा में शुक्ल जी ने ग्रामीण जीवन को लिया है। शिवपालगंज शहर के नजदीक का एक गाँव है, जो बहुत वर्षों से विकास से अलिप्त है। एक दृष्टि से शिवपालगंज तथा शिवपालगंजीय समस्याओं का सही चित्रण इस उपन्यास में उपलब्ध है। शिवपालगंज एक ग्राम ही है। इस ग्राम की विविध शैक्षणिक, आर्थिक पारिवारिक, राजनीतिक समस्या का चित्रण शुक्ल जी ने किया है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि उपन्यास-कारने कथावस्तु के चयन में ग्रामीण जीवन को ही लिया है।

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उनका असफल सामाजिक समस्याप्रधान व्यंग्यात्मक उपन्यास है। उपन्यासकारने अपने कथावस्तु विवेचन में समाज को महत्वपूर्ण माना है। विविध सामाजिक समस्याओं को अपने कथावस्तु में स्थान दिया है। मुख्य तथा गौण कथा का विकास विविध घटनाओं को लेकर किया है। घटनाएँ क्रमिक रूप से एक के बाद दूसरी आती है, लेकिन उसका आभास तक नहीं मिलता। शुक्ल जी का उद्देश विविध सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्य करता है।

सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत - १) राजनीतिक समस्या, २) शैक्षणिक समस्या, ३) आर्थिक समस्या, ४) धार्मिक-सांस्कृतिक समस्या ये समस्यायें आती है। "राग-दरबारी" इस उपन्यास में समस्याओं का सफल चित्रण हुआ है। तथा शुक्ल जी ने उन समस्याओं पर तीखा व्यंग्य प्रहार किया है।

अतः "राग-दरबारी" एक ग्रामीण जीवनपर आधारित समस्याप्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा ग्रामीण जीवनपर आधारित है।

७) शीर्षक :-

शीर्षक के गुणों पर "राग-दरबारी" उपन्यास का विवेचन :-

उपन्यास की सफलता शीर्षक पर आधारित रहती है। उत्कृष्ट शीर्षक ही उपन्यास को सफल बनाता है।

शीर्षक के गुणों के आधारपर "राग-दरबारी" का विवेचन निम्नलिखित है।

१. आकर्षक —

"राग-दरबारी" उपन्यास का शीर्षक आकर्षक है। आकर्षकता इस गुण के कारण ही वह सफल बन गया है। किसी भी उपन्यास के शीर्षक में आकर्षित करने की शक्ति "राग-दरबारी" इस उपन्यास के शीर्षक में है। जिसके कारण पाठक उपन्यास पढ़ने में रूची लेने लगते है।

शुक्ल जी ने वैद्यजी तथा उनके दरबार का चित्रण "राग-दरबारी" में किया है। दरबार वैद्यजी का है और उनके साथी उस दरबार के राग में मुग्ध हो गये है। पाठक चाहता है कि, उस दरबार का अध्ययन करे।

अत: "राग-दरबारी" यह शीर्षक छोटा होते हुए भी आकर्षक है।

२. जिज्ञासा एवं कौतुहल --

"राग-दरबारी" उपन्यास का शीर्षक पाठक की जिज्ञासा जागृत करनेवाला है। शीर्षक पढ़ते ही पाठक के मन में कौतुहल की भावना जागृत होकर वह पढ़ने लगता है। पाठक के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि, वह कौनसा राग है जो दरबारी गाना चाहते है। लेकिन इस उपन्यास में संगीत को स्थान नहीं दिया है। कौतुहल जागृत करने के लिए विविध घटनाओं का सफल चित्रण हुआ है।

इसप्रकार शुक्ल जी ने उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अंत तक पाठक की जिज्ञासा तथा कौतुहल को बनाए रखने में सफल हो गये है। "राग-दरबारी" का शीर्षक कौतुहल तथा जिज्ञासा जागृत करनेवाला है।

३. संक्षिप्त —

"राग-दरबारी" उपन्यास का शीर्षक संक्षिप्त है। संक्षिप्त होते हुए भी प्रभावपूर्ण है। शुक्ल जी ने यह शीर्षक उपन्यास की समाप्ती हो जाने के बाद दिया है। इस संक्षिप्त शीर्षक में उपन्यास का मूल तत्व निहीत है। शिवपालगंज के वैद्यजी तथा उनके दरबार का सही वर्णन इस शीर्षक में मिलता है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास का शीर्षक कथा, घटनाएँ तथा पात्रों के अनुकूल संक्षिप्त है। शीर्षक के प्रति किसी को भी संदेह नहीं होता।

४. केंद्रिय भावों को व्यक्त करनेवाला --

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" श्रेष्ठ व्यंग्यात्मक उपन्यास है। शुक्ल जी ने इस उपन्यास में एक गाँव शिवपालगंज तथा उस वातावरण का चित्रण कर भारतीय विविध सामाजिक समस्याओं पर करारा व्यंग्य - प्रहार किया है।

पहले शीर्षक को पढ़कर ऐसा लगता है कि, इसका संबंध संगीत से ही है। लेकिन इस उपन्यास में संगीत को स्थान न होकर भारतीय ग्रामीण तथा नागरी जीवन की विविध समस्याओं को उजागर किया है। "राग-दरबारी" इस उपन्यास का शीर्षक केंद्रिय भावों को व्यक्त करने में सफल हुआ है। शुक्ल जी ने वैद्यजी तथा उनके दरबारी व्यक्तियों का चित्रण कर शिवपालगंज के साथ भारत की राजनीतिक, सामाजिक समस्याप्रधान, शैक्षणिक समस्याओं का चित्रण किया है। तथा उन परिस्थितियोंपर मार्मिक व्यंग्य-चित्र हैं।

इसप्रकार शीर्षक पढ़ते ही उपन्यास के केंद्रीय भावों का चित्र स्पष्ट होता है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता स्वयंसिध्द है। इस उपन्यास का शीर्षक आकर्षक जिज्ञासा एवं कौतुहल उत्पन्न करनेवाला और केंद्रिय भावों को व्यक्त करनेवाला है। श्रीलाल शुक्ल ने उपन्यास में चित्रित विविध घटनाओं तथा पात्रों के कार्यों के अनुकुल शीर्षक दिया है। शीर्षक पढ़ते ही इस उपन्यास का मूल तथ्य ध्यान में आता है।

"राग-दरबारी" उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता स्वयंसिध्द है।

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" एक सफल ग्रामीण-सामाजिक व्यंग्यात्मक उपन्यास है। उपन्यासकार विषयवस्तु का चुनाव उन्नीसवीं सदी को ध्यान में रखकर किया है। वर्तमानकालीन विविध सामाजिक समस्याओं का लेखा-जोखा शुक्ल जी ने प्रस्तुत किया है।

उपन्यास की कथावस्तु में विविध घटनाओं का संकलन क्रमिक रूप से किया है। पात्रों के कार्यों के ओर भी अधिक ध्यान दिया है। उस उपन्यास में शिवपालगंज को मुख्य उपन्यास की कथावस्तु का केंद्र माना है। कथावस्तु में मौलिकता, संभाव्यता, प्रबंध कौशल और रोचकता आदि गुण सम्मिलित है। मुख्य कथा के साथ-साथ प्रासंगिक तथा गौण कथा का विकास विविध घटनाओं को लेकर किया है। कहीं भी अवास्तविकता का दर्शन नहीं होता। श्रीलाल शुक्ल जी का मुख्य उद्देश भारतीय विविध सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य करना है। इस उपन्यास को एक कोटी में रखना उचित न होगा। इस उपन्यास की कथा शिवपालगंज की ही न होकर संपूर्ण भारत देश की है। शुक्ल जी ने इस उपन्यास में समस्त घटनाचक्रों की मूल धुरी शिवपालगंज को बनाया है।

शुक्ल जी ने शिवपालगंज के केंद्र में रखकर ग्रामीण जीवन की विविध समस्याओं को उजागर किया है। घटनाओं में विविधता है। सभी घटनाएँ तथा पात्र लेखक के उद्देशपूर्ति में सहयोग देते है। इस उपन्यास को ग्रामीण सामाजिक व्यंग्यप्रधान उपन्यास कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

निष्कर्ष :-

अत: निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास कथावस्तु के तत्वों और गुणों की दृष्टि से सफल उपन्यास है। श्रीलाल शुक्ल जी ने कथावस्तु का विकास करने के लिए निम्न तत्वों और गुणों का सहारा लिया है।

१) मौलिकता —

"राग-दरबारी" उपन्यास एक मौलिक उपन्यास है। उपन्यास को पढ़ते समय आगामी घटनाओं का आभास नहीं मिलता परंतु अपने कथानक को मौलिक बनाने के लिए शुक्ल जल ने विविध घटनाओं का संगठन व्यवस्थित रूप में किया है। अत: कहा जा सकता है कि "राग-दरबारी" इस उपन्यास की कथावस्तु में मौलिकता को अपनाया है।

२) प्रबन्ध कौशल —

"राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु प्रबन्ध कुशलता की दृष्टि से श्रेष्ठ है। यह एक सामाजिक समस्याप्रधान उपन्यास होने के कारण मुख्य कथा के विकास के साथ-साथ गौण कथा को भी विकसित किया है। अत: उपन्यासकार की प्रबन्ध कुशलता के कारण ही इस उपन्यास की कथावस्तु में एकसमता दिखाई देती है।

३) संभवता —

"राग-दरबारी" उपन्यास लेखक शुक्ल जी का एक नया प्रयोग है। उपन्यास में संभाव्यता लाने के लिए उपन्यासकार ने पात्रों के चरित्र-चित्रण पर ही अधिक बल दिया है। उनकी वेशभूषा, वार्तालाप आदि बातों की ओर अधिक ध्यान दिया है क्योंकि उपन्यास के प्रति संभाव्यता प्रकट होनी चाहिए और संभवता प्रकट की है। अत: "राग-दरबारी" में संभाव्यता लाने के लिए पात्रों के कार्यों

का तथा अनेक घटनाओं का सही चित्रण किया है।

४) सुगठन —

"राग-दरबारी" उपन्यास में शुक्ल जी ने अपने उद्देश्य की पुर्ति के लिए अनेक घटनाओं को सुसंगठित रूपसे चित्रित किया है। साथ ही साथ अनावश्यक घटनाओं को त्यागकर आवश्यक घटनाओं को छूटने नहीं दिया है।

५) रोचकता —

"राग-दरबारी" उपन्यास की कथा रोचक है। उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अंत तक रोचकता का कमजोर होते नहीं दिखाया है। शुक्ल जी ने कथावस्तु का संयोजन करते समय विविध घटनाओं में रोचकता निर्माण की है, जिसके कारण उपन्यास पढ़ते समय पाठक का मन मुग्ध हो जा जाता है।

६) कथावस्तु प्रकार —

श्रीलाल शुक्ल जी "राग-दरबारी" उपन्यास एक ग्रामीण-सामाजिक-समस्याप्रधान-व्यंग्यात्मक उपन्यास है। उपन्यासकारने इस उपन्यास की कथावस्तु में ग्रामीण-सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। विविध सामाजिक समस्याओं को अपने कथावस्तु का विषय बनाया है। मुख्य तथा गौण कथाओं का विकास विविध घटनाओं को लेकर किया है। सामाजिक के अंतर्गत - १. राजनीतिक, २. शैक्षणिक, ३. आर्थिक और ४. धार्मिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण इस उपन्यास में किया है। अतः "राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु ग्रामीण-समाजपर आधारित है।

७) शीर्षक —

"राग-दरबारी" उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता स्वयंसिध्द है। "राग-दरबारी" उपन्यास का शीर्षक आकर्षक, जिज्ञासा एवं कौतुहल निर्माण करने वाला और केंद्रिय भावों को व्यक्त करनेवाला है। श्रीलाल शुक्ल ने उपन्यास में

विचित्र विविध घटनाओं तथा पात्रों के कार्यों के अनुकूल शीर्षक दिया है। शीर्षक पढ़तेही इस उपन्यास का मुल तथ्य ध्यान में आता है।

अतः कहा जा सकता है कि, "राग-दरबारी" एक सफल ग्रामीण-सामाजिक-व्यंग्यात्मक उपन्यास है।

संदर्भ – सूची :-

१) श्रीलाल शुक्ल — "राग-दरबारी" - पृष्ठ ४०५।

२) डॉ॰ सरजूप्रसाद मिश्र — "हिन्दी के सात उपन्यास" - पृष्ठ ११०।

३) — वही — - पृष्ठ १११।

४) श्रीलाल शुक्ल — "राग-दरबारी" - पृष्ठ १५।

५) श्रीलाल शुक्ल — "राग-दरबारी" - पृष्ठ १६।

६) — वही — - पृष्ठ ३५।

.....

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR